पेन्टाटयूक

अध्याय 8

अब्राहम का जीवन : आधुनिक प्रयोग

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
अब्राहम और यीशु 2
अब्राहम का वंश 2
एकवचनत्व 2
वंश के रूप में मसीह 4
मुख्य विषय 5
ईश्वरीय अनुग्रह 6
अब्राहम की विश्वासयोग्यता 6
अब्राहम के लिए आशीषें 7
अब्राहम के द्वारा आशीषें 7
इस्राएल और कलीसिया 8
अब्राहम का वंश 9
संख्यात्मक विस्तार 9
जातीय पहचान 9
आत्मिक चरित्र 10
ऐतिहासिक परिस्थितियाँ 12
मुख्य विषय 13
ईश्वरीय अनुग्रह 13
अब्राहम की विश्वासयोग्यता 14
अब्राहम के लिए आशीषें 14
अब्राहम के द्वारा आशीषें 15
उपसंहार 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

बाइबल के विषय में यदि कोई ऐसी बात है, जिसे आधुनिक समय के लोगों के लिए समझना कठिन होता है, तो वह यह है : यह कल्पना करना कठिन है कि हजारों साल पहले लिखी गई कहानियों में आज भी हमारे जीवनों का मार्गदर्शन करने की क्षमता है। और यह निश्चित रूप से बाइबल में अब्राहम की कहानियों पर भी लागू होता है। स्वयं अब्राहम लगभग चार हजार वर्ष पहले रहा था, और उसके बारे में कहानियाँ लगभग 3600 वर्ष पहले लिखी गई थीं। परंतु मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम इस तथ्य के प्रति समर्पित हैं कि ये कहानियाँ पवित्रशास्त्र का हिस्सा हैं और इसलिए आधुनिक लोगों के लिए भी लाभदायक हैं।

परंतु इस प्रतिबद्धता के साथ भी यह प्रश्न अब भी बना हुआ है : अब्राहम के बारे में ये कहानियाँ आज हमारे जीवनों पर कैसे लागू होती हैं? अब्राहम और हमारे बीच की इस 4000 वर्षों की दूरी को हम कैसे पाट सकते हैं?

हमने इस श्रृंखला का शीर्षक, पिता अब्राहम, दिया है, क्योंकि हम उत्पत्ति की पुस्तक में प्रकट अब्राहम के जीवन की खोज कर रहे हैं। यह अध्याय इस श्रृंखला के तीन परिचयात्मक अध्यायों में से तीसरा है, और हमने इसका शीर्षक, "अब्राहम का जीवन : आधुनिक प्रयोग" दिया है। इस अध्याय में हम अब्राहम के बारे में बात करनेवाले उत्पत्ति के उन अध्यायों के आधुनिक प्रयोगों को लेने के उचित तरीके पर ध्यान देने के द्वारा अब्राहम के जीवन के अपने अवलोकन को समाप्त करेंगे। हमें अपने जीवनों में अब्राहम के बारे में कहानियों को कैसे लागू करना चाहिए? आज वे हम पर कैसे प्रभाव डालेंगी?

यह समझने के लिए कि अब्राहम का जीवन हमारे संसार पर कैसे लागू होता है, हम दो आधारभूत दिशाओं में देखेंगे : पहला, अब्राहम और यीशु मसीह के बीच पाए जानेवाले संबंध, और दूसरा, इस्राएल के मूल श्रोताओं और कलीसिया के आधुनिक श्रोताओं के बीच पाए जानेवाले संबंध।

अब्राहम के जीवन के आधुनिक प्रयोग को देखने से पहले हमें एक क्षण लेकर उसकी समीक्षा करनी चाहिए जो हमने पिछले अध्यायों में देखा है। हमने सीखा था कि अब्राहम की कहानी पाँच सममित चरणों में विभाजित होती है। पहला, 11:10-12:9 में अब्राहम का जीवन अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के साथ आरंभ होता है। दूसरा, 12:10-14:24 में कई घटनाएँ अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। अब्राहम के जीवन का तीसरा और मध्य का भाग उस वाचा पर ध्यान केंद्रित करता है जो परमेश्वर ने 15:1-17:27 में अब्राहम के साथ बाँधी थी। अब्राहम के जीवन का चौथा भाग 18:1-21:34 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहारों की ओर मुड़ता है। और 22:1-25:18 में पाँचवाँ भाग अब्राहम के वंश और उसकी मृत्यु को के बारे में है। ये पाँच चरण कुलपिता के जीवन को एक सममित पद्धति में दर्शाते हैं। तीसरा भाग, जो अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के विषय में है, अब्राहम के जीवन के केंद्रबिंदु के रूप में काम करता है। दूसरा और चौथा भाग एक दूसरे के अनुरूप है क्योंकि ये दोनों अन्य लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहारों पर ध्यान देते हैं। पहले और अंतिम भाग अब्राहम के जीवन के दो सिरों को प्रदान करने के द्वारा एक दूसरे से मेल खाते हैं, और अतीत से लेकर भविष्य तक उसके पारिवारिक वंश को खोजते हैं। अब्राहम के जीवन की बुनियादी संरचना से परे, हमने पिछले अध्यायों में भी देखा था कि अब्राहम के जीवन के बारे में लिखने में मूसा का एक उद्देश्य था। मूसा ने इस्राएल को यह सिखाने के लिए अब्राहम के बारे में लिखा कि उन्हें क्यों और कैसे मिस्र को पीछे छोड़ना है और प्रतिज्ञा के देश पर विजय पाने की ओर आगे बढ़ना जारी रखना है। दूसरे शब्दों में, अब्राहम में अपने जीवनों की ऐतिहासिक

पृष्ठभूमियों को देखने के द्वारा, अब्राहम की कहानियों में अनुसरण करने या ठुकरा देने के आदर्शों या उदाहरणों को पाने के द्वारा, और पहचानने के द्वारा कि कैसे अब्राहम के जीवन ने उनके जीवन का पूर्वाभास कराया, मूसा का अनुसरण करनेवाले इस्राएली उन तरीकों को देख सके जिनमें उन्हें अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करना था। पिछले अध्यायों की इस समीक्षा को ध्यान में रखते हुए, अब हम अब्राहम के जीवन की कहानी के आधुनिक प्रयोग की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

अब्राहम और यीशु

आइए पहले अब्राहम और यीशु के बीच पाए जानेवाले संबंधों को देखें। दुखद रूप से, कई बार मसीही अब्राहम के जीवन को लगभग सीधे तौर पर आधुनिक जीवनों पर लागू करते हैं। हम अब्राहम की कहानियों को सरल नैतिक कहानियों के रूप में देखते हैं जो सीधे तौर पर हमारे जीवनों से बात करती हैं। मसीहियों के रूप में, हम जानते हैं कि अब्राहम के साथ हमारे संबंध में एक मध्यस्थ है; अब्राहम का जीवन हमारे लिए प्रासंगिक है क्योंकि हम अब्राहम के विशेष वंशज, अर्थात् मसीह के साथ जोड़े गए हैं। मसीह हमारे और अब्राहम के बीच खड़ा है। और इसलिए हमें अब्राहम के बारे में बाइबल की कहानियों को हमेशा मसीह और जो कुछ उसने किया है के प्रकाश में देखना चाहिए।

कुलपिता और मसीह के बीच संबंधों को समझने के लिए हम दो विषयों पर बातचीत करेंगे। एक ओर, हम देखेंगे कि कैसे नया नियम सिखाता है कि मसीह अब्राहम का वंश है। और दूसरी ओर, हम यह देखेंगे कि अब्राहम के जीवन से जिन चार मुख्य विषयों को हमने देखा है, वे अब्राहम के वंश के रूप में मसीह पर कैसे लागू होते हैं। आइए पहले इस तथ्य को देखते हैं कि यीशु अब्राहम का वंश है।

अब्राहम का वंश

अब एक ऐसा भाव है जिसमें अब्राहम पूरे इतिहास के सब विश्वासियों का पिता है — सब पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का। हम सब उसके परिवार का हिस्सा हैं, उसकी संतान और उसके उत्तराधिकारी हैं। परंतु जैसा कि हम देखेंगे, नया नियम इस बात को बिलकुल स्पष्ट कर देता है कि हम इस स्तर का आनंद लेते हैं क्योंकि हमें मसीह के साथ जोड़ा गया है जो अब्राहम का विशेष वंश है। यह समझने के लिए कि पवित्रशास्त्र इस दृष्टिकोण को कैसे सिखाता है, हम दो विषयों पर संक्षेप में बात करेंगे : पहला, “वंश” की अवधारणा के एकवचनत्व पर; और दूसरा, अब्राहम के अद्वितीय वंश के रूप में मसीह की अवधारणा पर।

एकवचनत्व

आइए सबसे पहले उन तरीकों पर विचार करें जिनमें बाइबल अब्राहम के वंश के एकवचनत्व पर ध्यान आकर्षित करती है। इस विषय पर ध्यान देनेवाला सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद शायद गलातियों 3:16 है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, “वंशों को,” जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे वंश को” और वह मसीह है (गलातियों 3:16)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने इस तथ्य का उल्लेख किया कि उत्पत्ति में परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश, या संतान से प्रतिज्ञाएँ की थीं। परंतु ध्यान दें कि कैसे पौलुस ने विशेष रूप से "वंश" शब्द पर यह कहते हुए टिप्पणी की कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशों — अर्थात् बहुत लोगों — से प्रतिज्ञाएँ नहीं की थीं, बल्कि अब्राहम और उसके वंश से की थीं, अर्थात् एक व्यक्ति से जो मसीह है।

पौलुस ने इस बात पर ध्यान देने के द्वारा तर्क दिया कि इब्रानी शब्द *ज़ेरा* जिसका अनुवाद "वंश" के रूप में किया गया है, एकवचन है। पौलुस के दिनों में उपलब्ध पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में यूनानी शब्द *स्पेर्मा* पर भी यही बात लागू होती है। जैसे पौलुस ने ध्यान दिया, परमेश्वर ने अब्राहम से यह नहीं कहा कि प्रतिज्ञा अब्राहम और उसके *वंशों* (बहुवचन) के लिए थी, परंतु एकवचन में, उसके *वंश* के लिए थी।

अब सतही तौर पर, ऐसा लगेगा कि पौलुस का दृष्टिकोण बिल्कुल सीधा था। अब्राहम का उत्तराधिकार केवल एक वंश या एक संतान के लिए आया क्योंकि वह शब्द एकवचन है। परंतु शब्द "वंश" के एकवचनत्व के बारे में पौलुस के तर्क ने व्याख्याकारों के लिए सब प्रकार की कठिनाइयों को उत्पन्न कर दिया है। समस्या का वर्णन इस रीति से किया जा सकता है। यह सच है कि "वंश" या *ज़ेरा* शब्द एकवचन है, परंतु पुराने नियम में कई बार, अब्राहम के जीवन की कहानियों सहित, शब्द "वंश" के एकवचन के रूप को भी सामूहिक एकवचन के अर्थ में लिया जाना चाहिए, अर्थात् ऐसा एकवचन शब्द जो एक समूह को दर्शाता है। इब्रानी शब्द *ज़ेरा* या "वंश" हमारे हिंदी शब्द "संतान" के समान है। यद्यपि रूप में यह शब्द एकवचन है, फिर भी यह शब्द केवल एक संतान या "वंश" को दर्शा सकता है, और साथ ही सामूहिक रूप में कई संतानों या "वंशजों" को भी दर्शा सकता है।

उदाहरण के लिए, शब्द "वंश" या *ज़ेरा* उत्पत्ति 15:13 में अपने अर्थ में निश्चित रूप से बहुवचन है। वहाँ हम परमेश्वर द्वारा अब्राहम से कहे इन शब्दों को पढ़ते हैं।

> यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएँगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे (उत्पत्ति 15:13)।

यहाँ पर, शब्द "वंश" एकवचन इब्रानी शब्द *ज़ेरा* का अनुवाद है, परंतु अर्थ में यह शब्द स्पष्ट रूप से बहुवचन है। यह पद "रहेंगे" के साथ वंश को बहुवचन में दर्शाता है, और क्रियाएँ "दास हो जाएँगे . . . उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे" भी इब्रानी भाषा में बहुवचन हैं।

निस्संदेह, पौलुस जानता था कि उत्पत्ति में शब्द "वंश" के एकवचन रूप ने कई बार एक से अधिक व्यक्तियों को दर्शाया था। वास्तव में, स्वयं पौलुस ने भी गलातियों 3:29 में शब्द वंश का प्रयोग बहुवचन के भाव में इस्तेमाल किया है जहाँ उसने इन शब्दों को लिखा,

> और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (गलातियों 3:29)।

इस पद के यूनानी रूप में, वाक्यांश "तुम . . . हो" बहुवचन क्रिया *एस्टे* का अनुवाद है। और "अब्राहम के वंश", "वारिस" *क्लेरोनोमाई* शब्द का समानार्थी है और यह भी बहुवचन है।

इस संदर्भ में हमें एक प्रश्न पूछना चाहिए। यदि पौलुस जानता था कि शब्द "वंश" का एकवचन रूप एक से अधिक लोगों को दर्शा सकता है, तो उसने इसके एकवचनत्व पर बल क्यों दिया? संभावना यह हो सकती है कि पौलुस के मन में उत्पत्ति 22:16-18 में उल्लिखित अब्राहम के जीवन की एक ही विशेष घटना हो। इन पदों में, शब्द "वंश" का अर्थ निश्चित रूप से एकवचन में है। इन पदों के इस शाब्दिक अनुवाद को सुनिए :

> यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तू ने . . . अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा। और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी : क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है (उत्पत्ति 22:16-18, शाब्दिक)।

दुखद रूप से, कई आधुनिक अनुवाद इस अनुच्छेद को ऐसे प्रस्तुत करते हैं जैसे कि “वंश” एक सामूहिक एकवचन हो। परंतु हमें याद रखना है कि यह पद इसहाक को बलि चढाने की कहानी का भाग है। और यहाँ शब्द “वंश” ने सामान्य रूप में अब्राहम के वंशजों को नहीं, बल्कि अब्राहम के पुत्र इसहाक को दर्शाया है। यह क्रिया “अधिकारी होगा” इब्रानी में एकवचन है, और यह भी ध्यान दें कि वाक्यांश “उसके शत्रुओं” में सर्वनाम एकवचन है।

जैसा कि हम बाद के अध्यायों में देखेंगे, उत्पत्ति 22 और उसके बाद के अध्याय सारा के पुत्र इसहाक को अब्राहम के अन्य पुत्रों, हाजिरा के पुत्र और कतूरा के पुत्रों से अलग करने में अधिक समय बिताते हैं। इसहाक प्रतिज्ञा का विशेष वंश था, वह जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के एकमात्र उत्तराधिकारी के रूप में चुना था। अतः इसहाक के जन्म से पहले उत्पत्ति अब्राहम के “वंश” को सामान्यतः एक सामूहिक के रूप में बताती है, अर्थात् बहुवचन में “वंशजों” के रूप में, परंतु यहाँ यह शब्द एक विशेष वंशज के रूप में इसहाक पर ध्यान देता है जो अब्राहम की प्रतिज्ञाओं का वारिस बनेगा।

इस संदर्भ में हम पौलुस के मूल तर्क को समझ सकते हैं जब उसने अब्राहम के एक वंश का उल्लेख किया था। पौलुस ने ध्यान दिया कि उत्पत्ति अध्याय 22 में परमेश्वर ने अब्राहम और सीधे उसके सब वंशजों से प्रतिज्ञाएँ नहीं की थी। उसने दर्शाया कि उत्पत्ति 22:16-18 में शब्द “वंश” का एकवचनत्व संकेत करता है कि प्रतिज्ञाएँ अब्राहम के विशेष पुत्र और उत्तराधिकारी इसहाक तक पहुँची थीं।

वंश के रूप में मसीह

अब्राहम के वंश के एकवचनत्व को ध्यान में रखने के साथ, अब हमें इस शिक्षा की ओर मुड़ना चाहिए कि मसीह अब्राहम का वंश है। गलातियों 3:16 में प्रेरित ने जो कहा है उसे फिर से सुनिए।

> अत: प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, “वंशों को,” जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे वंश को” और वह मसीह है (गलातियों 3:16)।

इस अनुच्छेद में पौलुस ने न केवल इस तथ्य की ओर ध्यान खींचा कि अब्राहम का वंश एक था परंतु इस पर भी कि अब्राहम का वह एक वंश मसीह है। अब जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, उत्पत्ति की पुस्तक के मूल अर्थ के संदर्भ में अब्राहम का एक वंश जिसके बारे में मूसा ने लिखा था, वह कोई और नहीं बल्कि इसहाक था, अर्थात् प्रतिज्ञा का विशेष पुत्र जो सारा से जन्मा था। तो फिर हमें पौलुस को कैसे समझना चाहिए जब उसने लिखा कि अब्राहम का एक वंश यीशु है?

इसके बारे में ऐसे सोचें। अब्राहम का उत्तराधिकार एक पारिवारिक उत्तराधिकार था जो कि उसके वंशजों का है। परंतु पवित्रशास्त्र के इतिहास में कई महत्वपूर्ण अवसरों पर परमेश्वर ने कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों को विशेष उत्तराधिकारियों के रूप में सेवा करने के लिए चुना जिन्होंने अब्राहम के उत्तराधिकार को प्राप्त किया और उसे दूसरे लोगों में बाँटा। इसहाक के विषय में कहें तो, वह अब्राहम के अन्य पुत्रों से अलग एक विशेष वंश था। जब इसहाक के दो पुत्र हुए, याकूब और एसाव, तो परमेश्वर ने याकूब को

अब्राहम के विशेष वंश के रूप में चुना और एसाव तथा उसके वंशजों को छोड़ दिया। याकूब से इस्राएल के गोत्रों के बारह कुलपिता आए। परंतु इस्राएल के गोत्रों में से कई व्यक्ति अब्राहम के विशेष उत्तराधिकारी थे। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के लोग जब मिस्र से निकलकर प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ रहे थे तो मूसा उनका अगुवा और मध्यस्थ था। और बाद में जब इस्राएल एक पूर्ण साम्राज्य बन गया, तो दाऊद और उसके पुत्रों ने अब्राहम की मीरास के मध्यस्थ होने की विशेष भूमिका निभाई।

दाऊद और उसके पुत्रों की इसी विशेष भूमिका ने मसीह का वर्णन अब्राहम के अंतिम महान वंश के रूप में करने में पौलुस की अगुवाई की, क्योंकि यीशु ही दाऊद के सिंहासन का सच्चा उत्तराधिकारी है। परमेश्वर के द्वारा उसे अपने लोगों का स्थायी राजा बनने के लिए चुना गया था। वह अब्राहम का महान अनंत राजकीय वंश, अर्थात् मसीहा है। और इस प्रकार, एकमात्र मसीह ही है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति अब्राहम की मीरास में शामिल हो सकता है। मसीह से अलग होकर कोई भी व्यक्ति अब्राहम की प्रतिज्ञाओं को कभी प्राप्त नहीं करेगा।

इसलिए हम अब्राहम के संबंध में यीशु को इस प्रकार सारगर्भित कर सकते हैं। मसीही दृष्टिकोण से, यीशु अब्राहम का अद्वितीय, अंतिम वंश है। और मसीहियों के रूप में जब हम अब्राहम के जीवन को आधुनिक संसार पर लागू करना चाहते हैं, तो हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि अब्राहम और हमारे संसार के बीच का संबंध यह है कि अब्राहम की महान आशीषें मसीह को दे दी गईं जब उसने अपने राज्य का उद्घाटन किया, और जब वह अपने राज्य को बनाना जारी रखता है और जब वह अपने राज्य को उसकी परिपूर्णता में लेकर आएगा।

नया नियम सिखाता है कि मसीह तीन मुख्य चरणों में अब्राहम की मीरास को प्राप्त करता और बाँटता है। पहला, उसके पहले आगमन के समय उसके राज्य के उद्घाटन में; दूसरा, उसके पहले आगमन के बाद से लेकर उसके पुनरागमन से पहले के पूरे इतिहास तक उसके राज्य की निरंतरता में; और तीसरा, उसके महिमामय पुनरागमन पर उसके राज्य की परिपूर्णता में। जब वह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ बैठा सब पर राज्य कर रहा है तो वह अब्राहम की मीरास को और अधिक मात्रा में प्राप्त कर रहा है और बाँट रहा है। और जब वह महिमा में वापस आएगा तो अब्राहम की मीरास को पूरी तरह से प्राप्त करेगा और पूरी रीति से बाँटेगा।

संक्षेप में, यह समझना महत्वपूर्ण है कि गलातियों 3:16 में पौलुस ने एक बहुत ही जटिल धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण को कुछ ही शब्दों में सारगर्भित किया है। जब पौलुस ने कहा कि प्रतिज्ञा अब्राहम और उसके एक वंश के लिए थी, और फिर मसीह के रूप में उस वंश को पहचाना, तो वह यह नहीं कह रहा था कि उत्पत्ति में "वंश" सीधे तौर पर यीशु की ओर संकेत कर रहा था। इसकी अपेक्षा, पौलुस ने प्रतीक के एक संक्षिप्त रूप में बात की जो इसहाक और मसीह के बीच पाया जाता था। इस विषय को और अधिक पूर्णता में कहने के लिए हम इसे ऐसे भी कह सकते हैं : जैसे इसहाक अपनी पीढ़ी में अब्राहम का प्रमुख उत्तराधिकारी था, वैसे ही नए नियम के युग में मसीह अब्राहम का सबसे महान पुत्र है, और अब्राहम का प्रमुख उत्तराधिकारी है।

मुख्य विषय

अब्राहम के वंश के रूप में मसीह के महत्व को और अधिक देखने के लिए उन चार मुख्य विषयों के आधार पर इन विषयों को खोजना सहायक होगा जिन्हें हमने अब्राहम की कहानियों में देखा है। आपको याद होगा कि हमने उत्पत्ति के इन अध्यायों में चार मुख्य विषयों को देखा है : ईश्वरीय अनुग्रह, अब्राहम की विश्वासयोग्यता, अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें, और अब्राहम के द्वारा परमेश्वर की आशीषें। अब्राहम और मसीह के बीच पाए जानेवाले संबंधों के प्रकाश में इन विषयों को हमें कैसे समझना चाहिए?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ईश्वरीय अनुग्रह

पहला, हमने देख चुके हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम के जीवन में बहुत अनुग्रह दिखाया। निस्संदेह, अब्राहम को व्यक्तिगत अनुग्रह पाना जरूरी था क्योंकि वह पापी मनुष्य था, परंतु इससे परे, अब्राहम के प्रति परमेश्वर की दया भी परमेश्वर की दयालुता का एक उद्देश्यपूर्ण प्रदर्शन थी। अब्राहम के साथ एक संबंध बनाने के द्वारा परमेश्वर ने वास्तव में पूरे जगत के उद्धार को आगे बढ़ाया।

अब परमेश्वर ने अब्राहम के जीवन में जितनी भी दया दिखाई हो, परंतु मसीही होने के नाते हम विश्वास करते हैं कि कुलपिता के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह मसीह में दिखाई गई परमेश्वर की दया की परछाई मात्र था। इसमें कोई संदेह नहीं कि मसीह स्वयं पापरहित था इसलिए उसने उद्धार देनेवाले अनुग्रह को प्राप्त नहीं किया, परंतु फिर भी अब्राहम के वंश के रूप में मसीह का आगमन जगत के प्रति परमेश्वर की दया का एक बड़ा उद्देश्यपूर्ण कार्य था।

परमेश्वर ने मसीह के पहले आगमन, अर्थात् राज्य के उद्‌घाटन में बहुत दया दिखाई थी। उसका जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण तथा पवित्र आत्मा का उंडेला जाना परमेश्वर के अनुग्रह के भव्य प्रदर्शन थे। और जब मसीह अपने राज्य की निरंतरता के दौरान अब स्वर्ग में राज्य कर रहा है, तो परमेश्वर और भी अधिक दया प्रकट करता है। जैसे कि उद्धार पूरे संसार में फैल गया है, तो परमेश्वर ने पूरे इतिहास में संसार के स्पष्ट परिवर्तन में मसीह में प्रकट दयालुता को प्रदर्शित किया है। और जब मसीह वापस आएगा तो राज्य की परिपूर्णता असीम दया को लेकर आएगी। मसीह वापस आएगा और नए आकाश और नई पृथ्वी को लाएगा। मसीह के अनुयायियों के रूप में जब भी हम अब्राहम की कहानियों में परमेश्वर को दया दिखाते हुए देखते है, तो हमारे हृदय और मन उस दया की ओर मुड़ जाएँ जो परमेश्वर ने मसीह में अपने राज्य के इन तीन चरणों में प्रकट की है।

अब्राहम की विश्वासयोग्यता

दूसरा, अब्राहम के जीवन के मूसा की प्रस्तुतिकरण में दूसरा महत्वपूर्ण विषय परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता था। आरंभ में, परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के देश में जाकर बसने की जिम्मेदारी को पूरा करने की आज्ञा दी। परंतु परमेश्वर ने अब्राहम के सामने उसके पूरे जीवनभर कई अन्य मांगों को भी रखा। मसीहियों के रूप में जब हम अब्राहम की जिम्मेदारियों के बारे में पढ़ते हैं, तो हमारे हृदय और मन अब्राहम के वंश मसीह की ओर और उसके स्वर्गीय पिता के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता की ओर प्रेरित होने चाहिए।

और निस्संदेह, मसीह अपने राज्य के इन तीनों चरणों में परमेश्वर पिता के प्रति विश्वासयोग्य था। राज्य के उद्‌घाटन में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की मांगों के प्रति मसीह स्वयं पूरी तरह से विश्वासयोग्य प्रमाणित हुआ। यद्यपि अब्राहम परमेश्वर के प्रति बहुत ही महत्वपूर्ण रूपों में विश्वासयोग्य था, फिर भी मसीह अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में सिद्ध रूप से विश्वासयोग्य रहा। और यही नहीं, राज्य की निरंतरता के दौरान सबके राजा के रूप में मसीह अपने स्वर्गीय पिता के प्रति सच्चा और विश्वासयोग्य बना रहता है। सुसमाचार को फैलाने और अपने लोगों के छुटकारे के द्वारा वह परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करनेवाले सब लोगों पर सिद्ध रूप में राज्य करता है।

अंततः राज्य की परिपूर्णता के समय जब मसीह वापस आएगा तो वह धार्मिकता के उन कार्यों को पूरा करेगा जिन्हें उसने पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में शुरू किया था। वह परमेश्वर के सब शत्रुओं का नाश करेगा और अपने पिता की महिमा के लिए सब वस्तुओं को नया बनाएगा। इसलिए हर बार जब हम परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता के विषय को देखते हैं, तो हम जानते हैं कि मसीहियों के रूप में हम इन विषयों को आधुनिक संसार पर उचित रीति से तभी लागू कर सकते हैं जब हम उन्हें अब्राहम के वंश, अर्थात् मसीह के साथ उचित रीति से जोड़ते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब्राहम के लिए आशीषें

तीसरा, मसीहियों के रूप में हम न केवल यह देखने में रुचि रखते हैं कि ईश्वरीय अनुग्रह और मानवीय विश्वासयोग्यता के ये विषय हमारे समय में मसीह में कैसे लागू होते हैं, बल्कि हम अब्राहम के जीवन के तीसरे मुख्य विषय में भी बहुत रुचि रखते हैं, जो है अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें।

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था कि इस्राएल एक महान राष्ट्र बनेगा, कि प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल राष्ट्र समृद्ध बनेगा, और कि अब्राहम और इस्राएल का पूरे संसार में एक बड़ा नाम होगा।

अब, एक बार फिर मसीहियों के रूप में हमारे मन उन आशीषों की ओर प्रेरित होने चाहिए जो परमेश्वर ने अब्राहम के वंश, अर्थात् मसीह को दी हैं। अपने पहले आगमन पर मसीह को मृतकों में से जिलाया गया और स्वर्ग तथा पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया; और स्वर्ग तथा पृथ्वी पर यीशु के महान नाम के समान कोई नाम नहीं है। यीशु अब राज्य की निरंतरता के दौरान आशीषों की बढ़ोतरी का आनंद लेना जारी रखता है। जब वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार संसार पर राज्य करता है तो अपने लिए और अधिक महिमा को प्राप्त करता है। परंतु राज्य की परिपूर्णता में जब मसीह महिमा में वापस आएगा तो वह असीमित रूप में इन आशीषों का आनंद लेगा। अब्राहम का वह महान पुत्र सबसे ऊँचा किया जाएगा और हर एक घुटना उसके सामने झुकेगा। इसलिए जब भी हम अब्राहम को परमेश्वर से आशीषें पाता देखते हैं, तो हमारी आँखें मसीह की ओर मुड़ जानी चाहिए जो अब्राहम की प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी है और परमेश्वर की और अधिक आशीषों का आनंद लेता है।

अब्राहम के द्वारा आशीषें

अंततः अब्राहम के जीवन का चौथा मुख्य विषय वे आशीषें हैं जो अब्राहम के द्वारा दूसरे लोगों तक पहुँचेंगी। परमेश्वर ने कहा था कि आशीष और श्राप देने की प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी के सब लोग अब्राहम के द्वारा आशीष पाएँगे। यह भव्य प्रतिज्ञा नए नियम में बड़े आकर्षण का केंद्र है। सुनिए रोमियों 4:13 में पौलुस ने अब्राहम से की गई इस प्रतिज्ञा का उल्लेख कैसे किया है। वहाँ वह यह कहता है,

> क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परंतु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली (रोमियों 4:13)।

यहाँ ध्यान दें कि जब परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वह सब जातियों को आशीष देगा, तो उसने यह प्रतिज्ञा की कि ऐसा अब्राहम द्वारा सब जातियों को अपने अधिकार में लेने और पूरे जगत में परमेश्वर के राज्य को फैलाने के द्वारा होगा। अब्राहम और उसके वंशजों को संसार का उत्तराधिकारी होना था, जिसमें सब जातियाँ उसकी प्रधानता के अधीन हों। जैसे आदम और हव्वा को आरंभ में पूरी पृथ्वी को अपने वश में करने के लिए कहा गया था, वैसे ही परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अब्राहम और उसके वंशज सब देशों की सब जातियों में परमेश्वर की आशीषों को फैलाने के द्वारा सारी पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।

अब, अब्राहम की आशीषों के पूरे संसार में फैलाए जाने का यह अंतिम विषय भी मसीह पर लागू होता है क्योंकि वह अब्राहम का वंश और अब्राहम की प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी है। राज्य के उद्घाटन में मसीह ने इस्राएल देश से विश्वासयोग्य लोगों को चुना था। परंतु जब वह मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग जाकर अपने सिंहासन पर विराजमान हुआ, तो उसे सारी पृथ्वी के राजा के रूप में ठहराया गया और उसने अपने बचे हुए विश्वासयोग्य लोगों से इस्राएल की आशीषों को सब जातियों में फैलाने के लिए कहा। साम्राज्य की निरंतरता के दौरान सुसमाचार के द्वारा सब जातियों पर मसीह के राजत्व का स्थापित होना सब जातियों को आशीष देने की अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा की पूर्णता है। और जब राज्य की परिपूर्णता के

समय मसीह वापस आएगा, तो वह परमेश्वर की आशीषों को पृथ्वी की सब जातियों तक पहुँचाएगा। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 22:1-2 में पढ़ते हैं :

> फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे (प्रकाशितवाक्य 22:1-2)।

यह प्रतिज्ञा कि अब्राहम सब जातियों के लिए आशीष ठहरेगा, अंततः मसीह के राज्य के उद्घाटन, उसकी निरंतरता और परिपूर्णता में पूरी हुई।

अतः हम इस विषय को ऐसे सारगर्भित कर सकते हैं। हमारे संसार के प्रति अब्राहम के जीवन के उचित आधुनिक प्रयोग में अब्राहम के वंश के रूप में मसीह की भूमिका की एक अंतर्निहित स्वीकारोक्ति हमेशा पाई जानी चाहिए। अब्राहम के विशेष वंश के रूप में केवल मसीह ही उन विषयों को परिपूर्ण या पूरा करता है जिन्हें हम अब्राहम के जीवन में पाते हैं। परमेश्वर की दया मसीह में दिखाई देती है; सच्ची और सिद्ध विश्वासयोग्यता मसीह में पाई जाती है; अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई आशीषों को मसीह प्राप्त करता है, और मसीह में हम अब्राहम की बड़ी आशीषों को जगत के छोर तक पहुँचते हुए देखते हैं। आधुनिक प्रयोग के बारे में हम जो कुछ भी और कहें, यह आवश्यक है हम कि अब्राहम और यीशु के बीच के इन संबंधों को याद रखें।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि अब्राहम और यीशु मसीह के बीच का संबंध अब्राहम की कहानियों और हमारे आज के संसार के बीच कैसे एक महत्वपूर्ण संबंध की रचना करता है, इसलिए हमें आधुनिक प्रयोग के दूसरे पहलू, की ओर मुड़ना चाहिए, जो है इस्राएल और कलीसिया के बीच का संबंध।

इस्राएल और कलीसिया

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जब मूसा ने पहले पहल अब्राहम के जीवन के अपने विवरण को लिखा, तो उसने ये बातें इस्राएल के लोगों को मिस्र को पीछे छोड़ने और प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु लिखी थीं। उन्हें अब्राहम के जीवन के इस दर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को खोजना था; उन्हें अब्राहम के जीवन की कहानियों में अनुसरण करने और ठुकरा देने के उदाहरणों को ढूँढ़कर इसे पूरा करना था; और उन्हें अब्राहम के जीवन में अपने अनुभवों के पूर्वाभासों को भी देखना था। इस कारण, यदि हम यह देखें कि अब्राहम की कहानियाँ कैसे आधुनिक संसार पर लागू होती हैं, तो हमें ध्यान देना चाहिए कि मूसा का अनुसरण कर रही इस्राएल जाति और वर्तमान मसीही कलीसिया के बीच संबंधों के बारे में नया नियम क्या सिखाता है।

इस्राएल और कलीसिया के बीच इस संबंध की खोज करने के लिए हम ऐसे दो विषयों का अध्ययन करेंगे जो हमारी पूर्व की चर्चा के समानांतर हैं। पहला, हम अब्राहम के वंश के विषय की और अधिक खोज करेंगे जैसे कि यह इस्राएल जाति और मसीह की कलीसिया पर लागू होता है। और दूसरा, हम देखेंगे कि अब्राहम के वंश का विषय अब्राहम के जीवन की कहानियों के चार प्रमुख विषयों में कैसे अभिव्यक्त होता है। आइए पहले अब्राहम के वंश के रूप में इस्राएल और कलीसिया को देखें।

अब्राहम का वंश

अब्राहम के वंश के रूप में इस्राएल और कलीसिया के बीच संबंधों को देखने के लिए हम चार विषयों को संक्षेप में देखेंगे। पहला, हम अब्राहम के वंश के संख्यात्मक विस्तार को देखेंगे। दूसरा, हम उसके वंश की जातीय पहचान पर ध्यान देंगे। तीसरा, हम अब्राहम के वंश के आत्मिक चरित्र पर ध्यान देंगे। और चौथा, हम अब्राहम के वंश की ऐतिहासिक परिस्थिति को देखेंगे। आइए पहले अब्राहम के वंश के संख्यात्मक विस्तार पर विचार करें।

संख्यात्मक विस्तार

जैसा कि हमने अभी देखा है, उत्पत्ति की पुस्तक स्पष्ट करती है कि वाक्यांश "अब्राहम का वंश" ने एक समय एक विशेष व्यक्ति, इसहाक को दर्शाया था, और नया नियम अब्राहम और मसीह के बीच संबंध को स्थापित करने के लिए इस बात को आधार बनाता है। परंतु अब हमें अब्राहम के वंश के बाइबल-आधारित दृष्टिकोण की एक और विशेषता को देखने के लिए अपने दर्शन को बढ़ाना चाहिए। अब्राहम की कहानियों में इसहाक ही एकमात्र व्यक्ति नहीं था जिसे अब्राहम का वंश या संतान कहा गया था। इसहाक ने अब्राहम की मीरास को अकेले ही प्राप्त नहीं किया था। वह एक ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा अनेक लोग अब्राहम के वंशज होने के स्तर का आनंद लेंगे। इस कारण, मूसा ने भी बार-बार इस्राएल जाति को अब्राहम के वंश के रूप में दर्शाया। और लगभग इसी तरह से, जब हम अब्राहम की कहानियों को अपने आधुनिक संसार पर लागू करते हैं, तो यद्यपि यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि नए नियम में मसीह अब्राहम का सर्वोच्च वंश है, फिर भी हमें यह भी याद रखना चाहिए कि मसीही कलीसिया भी अब्राहम का वंश है। जैसे कि पौलुस ने गलातियों 3:29 में कहा है,

> और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (गलातियों 3:29)।

जैसे कि पौलुस ने इस अनुच्छेद में स्पष्ट किया, हम अब्राहमसे इसलिए संबंधित हैं क्योंकि हम मसीह के साथ जोड़े गए हैं। पुराने नियम में इस्राएल राष्ट्र के समान हम अब्राहम के वंश हैं। इस कारण, अब्राहम की कहानियाँ न केवल मसीह पर लागू होती हैं, बल्कि अब्राहम की बहुत सी संतानों पर भी जो कलीसिया में उसके साथ पहचाने जाते हैं।

जातीय पहचान

अब इस तथ्य से बढ़कर कि पुराने नियम में इस्राएल अब्राहम का वंश था और आज मसीही कलीसिया है, हमें पुराने और नए दोनों नियमों में अब्राहम के वंश की जातीय पहचान पर भी टिप्पणी करनी चाहिए। जैसे कि हम देख चुके हैं, अब्राहम की कहानियाँ सबसे पहले इस्राएल जाति के लिए लिखी गई थीं जिन्होंने मूसा का अनुसरण किया था। जबकि यह निश्चित रूप से सच है कि मूल श्रोताओं में अधिकांश लोग यहूदी जाति के थे, अर्थात् अब्राहम के शारीरिक वंशज थे, फिर भी यह सोचना गलत होगा कि सारे मूल श्रोता पूरी रीति से या केवल यहूदी थे। मूसा का अनुसरण करनेवाले लोगों में से बहुत से लोग यहूदियों और अन्यजातियों के मिश्रित लोग थे जिन्हें इस्राएल देश में सम्मिलित किया गया था। फलस्वरूप, कई अवसरों पर पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि उत्पत्ति की पुस्तक के मूल श्रोता केवल यहूदी ही नहीं थे।

उदाहरण के लिए, सुनिए कि निर्गमन 12:38 में मूसा का अनुसरण करनेवालों का वर्णन कैसे किया गया है :

> उनके साथ मिली-जुली हुई एक भीड़ गई, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, बहुत से पशु भी साथ गए (निर्गमन 12:38)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ ध्यान दें कि इस्राएलियों में “मिली-जुली हुई एक भीड़” शामिल थी। इस भीड़ में ऐसे गैर-यहूदी लोग शामिल थे जिन्होंने इस्राएल के साथ मिलकर और मिस्र देश को छोड़ दिया था। पवित्रशास्त्र में इस समूह का वर्णन कई बार किया गया है। लगभग इसी तरह, पुराने नियम के बाद के हिस्से बताते हैं कि राहब और रूत जैसे जाने-माने गैर-यहूदियों को बाद की पीढ़ियों में इस्राएल में जोड़ा गया था, और पहला इतिहास 1-9 की वंशावली परमेश्वर के लोगों के नामों में गैर-यहूदियों को शामिल करती है।

अतः हम देखते हैं कि अब्राहम का वंश जिसके लिए मूसा ने मूल रूप से अब्राहम की कहानियों को लिखा था, वह जातीय रूप से मिश्रित समूह था। इसमें अब्राहम के शारीरिक वंशज और गैर-यहूदी लोग शामिल थे जिन्हें इस्राएल के परिवार में शामिल कर लिया गया था। दोनों समूहों ने अब्राहम की कहानियों के माध्यम से प्रतिज्ञा के देश में अपने भविष्य के बारे में जाना था।

लगभग इसी तरह, मसीही कलीसिया आज जातीय रूप में विविध है। इसमें वे यहूदी लोग शामिल हैं जो मसीह को अपने प्रभु के रूप में मानते हैं और गैर-यहूदी हैं जिन्हें अब्राहम के परिवार में शामिल किया गया है क्योंकि वे भी मसीह को प्रभु के रूप में मानते हैं। अब, यह सच है कि जैसे इतिहास ने दर्शाया है, नए नियम की कलीसिया यहूदियों की तुलना गैर-यहूदियों से अधिक भर गई है, परंतु फिर भी अब्राहम के वंश की जातीय विविधता पुराने नियम के समान आज भी एक वास्तविकता है। अतः जैसे कि अब्राहम की कहानियाँ पहले अब्राहम के वंश के रूप में समझे गए यहूदियों और गैर-यहूदियों को दी गईं, इसलिए हमें आज अब्राहम की कहानियों को यहूदियों और गैर-यहूदियों पर लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए जिन्हें अब अब्राहम के वंश के रूप में गिना जाता है क्योंकि वे पूरे संसार में कलीसिया में पाए जाते हैं।

यह आधुनिक प्रयोग का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि बहुत से मसीहियों ने इस झूठी शिक्षा का समर्थन किया है कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाएँ केवल यहूदी जाति पर ही लागू होती हैं। इस दृष्टिकोण में, गैर-यहूदी विश्वासियों के लिए परमेश्वर के पास अलग कार्य-योजना है। इधर-उधर के कुछ आत्मिक सिद्धांतों के अतिरिक्त, गैर-यहूदी विश्वासी अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी नहीं हैं। अब यह दृष्टिकोण चाहे जितना भी लोकप्रिय क्यों न हो, हमें हमेशा यह याद रखना है कि अब्राहम का वंश मूसा के समय जातीय रूप से विविध था और अब्राहम का वंश आज भी जातीय रूप से विविध लोगों का ही बना हुआ है। अपना अनुसरण कर रहे राष्ट्र को मूसा ने जो कुछ सिखाया, वह आज उस राष्ट्र की निरंतरता, अर्थात् यीशु मसीह की कलीसिया पर लागू होता है।

आत्मिक चरित्र

तीसरा, अब्राहम के जीवन के आधुनिक प्रयोग को अब्राहम के वंश के रूप में इस्राएल और कलीसिया के आत्मिक चरित्र पर भी ध्यान देना चाहिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, पुराना नियम दृष्टिगोचर इस्राएल राष्ट्र को अब्राहम के वंश, अब्राहम के सामूहिक वंश के रूप में पहचानता है, परंतु हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि दृष्टिगोचर इस्राएल राष्ट्र में आत्मिक विविधता थी। उसमें अविश्वासी तथा सच्चे विश्वासी दोनों थे। पुराने नियम का विवरण स्पष्ट करता है कि इस्राएल राष्ट्र के कई पुरुष, महिलाएँ और बच्चे वास्तव में विश्वास नहीं करते थे, परंतु अन्य लोग सच्चे विश्वासी थे जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते थे। यह सच है कि इस्राएल में प्रत्येक ने, चाहे विश्वासी और या अविश्वासी, परमेश्वर से बहुत सी भौतिक आशीषों को प्राप्त किया था। वे सब मिस्र की गुलामी से छुड़ाए गए थे; उन सबको सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ वाचाई संबंध में जोड़ा गया था; उन सबके पास विश्वास के लिए कई अवसर थे और उन सबको प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश दिया गया था। परंतु कई महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी थीं। एक ओर, इस्राएल के भीतर के अविश्वासियों ने विश्वासघात के द्वारा अपने हृदयों के असली चरित्र को दिखाया। और अब्राहम की कहानियों की रचना उन्हें सच्चे पश्चाताप और उद्धार देनेवाले विश्वास की ओर बुलाने के लिए की गई थीं।

दूसरी ओर, इस्राएल के भीतर के सच्चे विश्वासियों ने अपनी विश्वासयोग्यता के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया और अपने हृदयों के सच्चे चरित्र को दिखाया। अब्राहम की कहानियों की रचना इन सच्चे विश्वासियों को उनके विश्वास में प्रोत्साहित करने के लिए की गई थी। अब अपने विश्वासघात के कारण इस्राएल के भीतर के अविश्वासियों ने केवल भौतिक आशीषों को ही प्राप्त किया। परंतु अनंतता में वे परमेश्वर के अंतिम, अनंत दंड को प्राप्त करेंगे। सच्चे विश्वासी ही अब्राहम के सच्चे वंश, उसके आत्मिक वंशज, और ऐसी संतान थे जिन्होंने न केवल अनेक भौतिक आशीषों का आनंद लिया बल्कि एक दिन वे नए आकाश और नई पृथ्वी पर अब्राहम की मीरास की अनंत आशीष को भी प्राप्त करेंगे। पौलुस ने रोमियों 9:6-8 में बड़े बल के इस दृष्टिकोण पर तर्क दिया है। सुनिए उसने वहाँ पर क्या कहा।

> इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं; और न अब्राहम के वंश होने के कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परंतु (लिखा है) "इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परंतु प्रतिज्ञा की सन्तान वंश गिने जाते हैं (रोमियों 9:6-8)।

अब यह देखना कठिन नहीं है कि ऐसी आत्मिक विविधता मसीह की कलीसिया में भी पाई जाती है। बपतिस्मा के द्वारा जो लोग नए नियम में दृष्टिगोचर कलीसिया के साथ जुड़े हुए हैं, उनमें दो प्रकार के लोग शामिल हैं : अविश्वासी एवं विश्वासी। निस्संदेह, जैसे पुराने नियम के इस्राएल में सब लोगों ने परमेश्वर और उसके लोगों के साथ संबंध के कारण कई अस्थाई सौभाग्यों का आनंद लिया, वैसे ही मसीह की कलीसिया में शामिल सब लोगों के लिए अनेक भौतिक आशीषें हैं। उनके पास प्रेम करनेवाला एक समुदाय है; उनके पास परमेश्वर का वचन और मसीही संस्कार हैं; उनके सामने सुसमाचार को समझाया और प्रदान किया जाता है। परंतु दृष्टिगोचर कलीसिया के भीतर बहुत से लोग अपने विश्वासघात के द्वारा अपने हृदयों के असली चरित्र को दिखाते हैं। और सच्चे पश्चाताप और उद्धार देनेवाले विश्वास की ओर बुलाहट देने के द्वारा अब्राहम की कहानियों को कलीसिया के इन अविश्वासियों पर लागू किया जाना चाहिए।

परंतु दृष्टिगोचर कलीसिया में सच्चे विश्वासी भी हैं जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखते हैं और अपनी विश्वासयोग्यता के द्वारा अपने हृदयों के चरित्र को दिखाते हैं। इन सच्चे विश्वासियों को उनके जीवनभर विश्वास में बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करने के द्वारा अब्राहम की कहानियों को उन पर लागू किया जाना चाहिए। अब अपने विश्वासघात के कारण कलीसिया के भीतर के अविश्वासी केवल अस्थाई आशीषों को ही प्राप्त करेंगे। अनंतता में, वे परमेश्वर के अनंत दंड को प्राप्त करेंगे। परंतु अब्राहम के सच्चे वंश, अब्राहम की सच्ची संतान, अर्थात् वे जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया है, न केवल अस्थाई आशीषों को पाएँगे बल्कि एक दिन अपना अनंत पुरस्कार, अर्थात् नए आकाश और नई पृथ्वी पर अब्राहम की मीरास को प्राप्त करेंगे।

इसीलिए याकूब ने याकूब 2:21-22 में अब्राहम के बारे में यह लिखा है। अविश्वासियों और सच्चे विश्वासियों से बनी दृष्टिगोचर मसीही कलीसिया को लिखते हुए, उसने इन वचनों को कहा,

> जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था? अतः तू ने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है, और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ (याकूब 2:21-22)।

यहाँ याकूब का मुख्य विचार था कि अब्राहम की कहानियाँ कलीसिया में अविश्वासियों को अपने पाखंड से फिरने की चुनौती देती हैं और वे कलीसिया के सच्चे विश्वासियों को विश्वासयोग्य जीवन जीने के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

द्वारा अपने विश्वास को निरंतर व्यक्त करते रहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। और आज जब हम अब्राहम की कहानियों के आधुनिक प्रयोग को लागू करते हैं तो हमें कलीसिया की आत्मिक विविधता को पहचानने के द्वारा याकूब के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

ऐतिहासिक परिस्थितियाँ

चौथा, आधुनिक संसार में अब्राहम के जीवन को लागू करने के लिए हमें यह भी याद रखना चाहिए कि मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएल और वर्तमान मसीही कलीसिया की ऐतिहासिक परिस्थितियों के बीच महत्वपूर्ण समानता है। आपको याद होगा कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में उन इस्राएलियों के लिए लिखा जो एक यात्रा पर थे। चाहे उसने निर्गमन के लोगों की पहली पीढ़ी या दूसरी पीढ़ी के लिए लिखा, उसके मूल श्रोता दो संसारों के बीच यात्रा कर रहे थे। एक ओर, उन्होंने मिस्र की गुलामी को छोड़ा था। परंतु दूसरी ओर, उन्होंने अभी तक प्रतिज्ञा किए हुए कनान देश में प्रवेश नहीं किया था। या इसे दूसरे रूप में कहें तो, इस्राएल जाति ने अपने पुराने संसार से आरंभिक छुटकारा पा लिया था, परंतु अभी तक उन्होंने अपने नए संसार में प्रवेश नहीं किया था। और इसके फलस्वरूप, मूसा ने इस्राएल को मिस्र से अपने सभी लगावों को त्यागने और प्रतिज्ञा के देश पर विजय पाने की ओर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करने के लिए लिखा।

आधुनिक प्रयोग के लिए मूल श्रोताओं की ऐतिहासिक स्थिति महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान मसीही कलीसिया भी समान ऐतिहासिक स्थिति में है। जिस प्रकार इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुटकारा तो मिल गया था, परंतु वह प्रतिज्ञा के देश के महिमामय जीवन की ओर अभी आगे बढ़ ही रहा था, वैसे ही मसीह की कलीसिया को मसीह के उस कार्य के द्वारा पाप के प्रभुत्व से छुड़ाया तो गया है जो मसीह ने इस पृथ्वी पर रहते हुए पूरा किया था, परंतु वह अभी भी नई सृष्टि की महिमा की ओर आगे बढ़ रही है जो उस समय मिलेगी जब मसीह वापस आयेगा। ये समानांतर परिस्थितियाँ हमें वर्तमान कलीसिया पर अब्राहम के जीवन को लागू करने का एक संदर्भ प्रदान करती हैं। जिस प्रकार मूसा ने इस्राएल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की उसकी यात्रा में प्रोत्साहन और उनके मार्गदर्शन देने के लिए अब्राहम के बारे में लिखा, वैसे ही उसकी कहानियाँ मृत्यु के इस संसार से अनंत जीवन के नए संसार तक हमारी यात्रा में हमें प्रोत्साहन और मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि ये ऐतिहासिक समानताएँ हमें वर्तमान प्रयोग की ओर एक ऐसा दिशा-निर्धारण प्रदान करती हैं क्योंकि प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया पर पुराने नियम को लागू करते समय इन्हीं पर आधारित था। सुनिए कैसे उसने 1 कुरिन्थियों 10:1-6 में मूसा के श्रोताओं और कलीसिया के बीच ऐतिहासिक समानताओं पर ध्यान दिया।

> हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया; और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। परंतु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए। ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें (1 कुरिन्थियों 10:1-6)।

सरल शब्दों में कहें तो, पौलुस ने लिखा कि जंगल में मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों ने उन बातों का अनुभव किया था जो मसीहियों के अनुभवों के समान थे। जैसे हमें मसीह के द्वारा छुटकारा दिया गया है वैसे ही उन्हें भी मूसा के द्वारा छुटकारा दिया गया था। जैसे मसीहियों ने मसीह में बपतिस्मा पाया है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वैसे ही उन्हें मूसा में बपतिस्मा दिया गया था। उन्होंने परमेश्वर की ओर से मन्ना खाया और पानी पीया जैसे मसीही प्रभु-भोज के संस्कार में खाते और पीते हैं। फिर भी, अनुग्रह के इन आरंभिक अनुभवों ने इस्राएल को जाँचने की अवधि, अर्थात् परखने की एक अवधि में रखा, जब वे प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ रहे थे। और दुःख की बात यह है कि मूसा के दिनों में परमेश्वर अधिकांश इस्राएलियों से खुश नहीं था और वे जंगल में ही मर गए। अतः पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि मसीहियों को कलीसिया के रूप में अपनी यात्रा के विषय में इस्राएल के अनुभव से सीखना चाहिए। पौलुस के उदाहरण से, हम इस बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं कि मसीही कलीसिया पर अब्राहम के जीवन को कैसे लागू करें।

अब्राहम के जीवन के बारे में मूसा की कहानियों ने इस्राएल को विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया जब उन्होंने मुड़कर वह देखा जो परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से छुड़ाने के लिए किया था और जब वे प्रतिज्ञा के देश की ओर आगे बढ़ रहे थे। लगभग इसी प्रकार, हमें अब्राहम की कहानियों को आज कलीसिया पर ऐसे रूपों में लागू करना चाहिए जो हमारी यात्रा में हमें प्रोत्साहित करें। हमें राज्य के उद्घाटन में मसीह के द्वारा किए गए कार्यों के कारण उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए। जब हमारे समय में उसका राज्य बढ़ रहा है तो हमें निरंतर उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए और हमें उस दिन की अभिलाषा करनी चाहिए जब हमारी आत्मिक यात्रा समाप्त होगी, अर्थात् जब हम नए आकाश और नई पृथ्वी में प्रवेश करेंगे।

अतः हम देखते हैं कि जब हम अब्राहम के जीवन के आधुनिक प्रयोग की ओर बढ़ते हैं, तो हमें न केवल अब्राहम और यीशु के बीच के संबंधों पर अपना ध्यान देना चाहिए, बल्कि हमें अब्राहम की कहानियों को सबसे पहले प्राप्त करनेवाले इस्राएल राष्ट्र और मसीही कलीसिया के बीच के संबंधों पर भी ध्यान देना चाहिए। पुराने नियम का इस्राएल और नए नियम की कलीसिया अब्राहम के वंश हैं; हम दोनों की पहचान मिश्रित जाति की है; हम दोनों आत्मिक रूप से विविध हैं और हम दोनों परमेश्वर के महिमामय राज्य के लक्ष्य की ओर एक यात्रा पर हैं।

मुख्य विषय

यह देखने के बाद कि अब्राहम के जीवन की कहानियाँ वर्तमान संसार में अब्राहम के वंश की निरंतरता के रूप में मसीही कलीसिया पर लागू होती हैं, अब हमें यह भी देखना चाहिए कि आधुनिक प्रयोग की यह प्रक्रिया अब्राहम के जीवन के लिए समर्पित अध्यायों के चार मुख्य विषयों को कैसे देखती है। मसीह में हमारे प्रतिदिन जीवनों के बारे में इन विषयों का क्या कहना है?

जैसे कि आपको याद होगा कि अब्राहम की कहानियाँ चार मुख्य विषयों को दर्शाती हैं : ईश्वरीय अनुग्रह, अब्राहम की विश्वासयोग्यता, अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें, और अब्राहम के द्वारा आशीषें। आगे के अध्यायों में हम बार-बार यह दर्शाएँगे कि अब्राहम के वंश के रूप में ये विषय हमारे जीवनों से कैसे बातें करते हैं। इस समय, हम संक्षेप में कुछ सामान्य निर्देशों को प्रस्तुत करेंगे जिनका अनुसरण हमें करना चाहिए। आइए पहले ईश्वरीय अनुग्रह के विषय पर विचार करें।

ईश्वरीय अनुग्रह

परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति न केवल उसके जीवन के आरंभ में बल्कि पृथ्वी पर उसके जीवन के प्रत्येक दिन बड़ी दया दिखाई। और जैसे कि पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है, जिस प्रकार परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति दया दिखाई, वैसे ही परमेश्वर आज मसीहियों के प्रति भी दया दिखाता है जो हमें मसीह में बनाए और संभाले रखती है। जैसे कि पौलुस ने इफिसियों 2:8-9 में लिखा है,

> क्योंकि विश्‍वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्‍वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों 2:8-9)।

मसीह में उद्धार परमेश्वर के अनुग्रहकारी दान है; यहाँ तक कि जो विश्वास हमारे पास है वह भी उसी से मिलता है। हम परमेश्वर की दया पर इतने निर्भर रहते हैं कि अपने मसीही जीवन के प्रत्येक दिन हमें उस दया में निरंतर बने रहना जरुरी है। परमेश्वर के सँभालनेवाले अनुग्रह के बिना विश्वासयोग्य बने रहने के हमारे सारे प्रयास व्यर्थ हैं।

इसी कारण, जिस प्रकार मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों ने जब अब्राहम की कहानियों को सुना तो वे अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के आश्चर्यकर्म को समझ गए होंगे, वैसे ही मसीह के अनुयायियों के रूप में सामूहिक और व्यक्तिगत आधार पर जब भी हम परमेश्वर द्वारा अब्राहम के प्रति दया दिखाने के बारे में पढ़ते हैं, तो हमारे पास यह सीखने के अवसर होते हैं कि हम उन कार्यों के प्रति कैसे आभारी बनें जो परमेश्वर ने हमारे लिए किए हैं। परमेश्वर ने हम पर बहुत दया दिखाई है और हमें सीखना चाहिए कि हम उसकी दया को कैसे खोजें और कैसे उस पर निर्भर रहें।

अब्राहम की विश्वासयोग्यता

लगभग इसी तरह, अब्राहम की विश्वासयोग्यता का विषय भी कई स्तरों पर मसीह के अनुयायियों पर लागू होता है। जब हम अब्राहम के जीवन के बारे में पढ़ते हैं, तो हम ऐसी कई परिस्थितियों को देखते हैं जिनमें अब्राहम को आज्ञाकारिता में परमेश्वर की सेवा करने की आज्ञा दी गई थी। निस्संदेह, वह इस जीवन में सिद्धता तक नहीं पहुँचा, परंतु उसने सच्चे विश्वास का फल अवश्य दिखाया। अब, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में भी विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता सदैव परमेश्वर की दया और अनुग्रह पर आधारित थी। इसलिए हमें इस बात पर बल दिए जाने को कर्म-आधारित सिद्धांत के रूप में लेने की गलती नहीं करनी चाहिए। फिर भी, जैसे कि पुराने नियम में था, वैसे ही आज भी सच्चे विश्वासियों से अपेक्षा की जाती है कि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का प्रत्युत्तर दें।

इसीलिए नया नियम बार-बार मसीह के अनुयायियों के लिए विश्वासयोग्यता की जिम्मेदारी पर बल देता है। सुनिए कैसे पौलुस ने इफिसियों 2:8-10 में अनुग्रह और विश्वासयोग्यता को जोड़ा।

> क्योंकि विश्‍वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्‍वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्‍वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया (इफिसियों 2:8-10)।

जैसे कि पद 10 स्पष्ट करता है, आज मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे भले कार्य करें। परमेश्वर हमें उद्धार देनेवाला विश्वास देता है ताकि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य बनें। इसलिए हर बार जब हम देखते हैं कि अब्राहम का जीवन कैसे मानवीय विश्वासयोग्यता से संबंधित विषयों को दर्शाता है, तो हम अपने जीवनों पर उन नैतिक जिम्मेदारियों को लागू करने की स्थिति में होते हैं।

अब्राहम के लिए आशीषें

तीसरा, हमें उन तरीकों से भी अवगत होना चाहिए जिनमें अब्राहम को दी गई आशीषें मसीही जीवन में लागू होती हैं। आपको याद होगा कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश से महान आशीषों की प्रतिज्ञा की थी। अंततः वे बड़े प्रसिद्ध होकर एक महान और समृद्ध राष्ट्र बन जाएँगे। और अब्राहम की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कहानियों में बहुत बार हम ऐसे समयों को पाते हैं जब परमेश्वर ने कुलपिता को इन परम आशीषों के पूर्व-अनुभव को प्राप्त करने की आशीष दी।

जिस प्रकार इस्राएल के मूल श्रोता अपनी परम आशीषों की प्रतीक्षा करते हुए अपने जीवनों में अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देख सके, वैसे ही मसीहियों के रूप में हम भी आशा के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए आज इन्हीं आशीषों के कई पूर्व-अनुभवों को यहाँ और इसी समय प्राप्त करते हैं जब वे अपनी सारी परिपूर्णता में हम तक पहुँचेंगी। जब हम अपने प्रतिदिन के जीवन को उन परम आशीषों की आशा में बिताते हैं जो मसीह के पुनरागमन पर हमारी होंगी, तो इस जीवन में जो आशीषें हम देखते हैं, वे हमें बहुत प्रोत्साहित कर सकती हैं।

अब्राहम के द्वारा आशीषें

अंततः जब अब्राहम की कहानियाँ उन आशीषों पर ध्यान देती हैं जो परमेश्वर अब्राहम के द्वारा संसार को देगा, तो मसीहियों के पास भी उन आशीषों पर विचार करने का अवसर है जो हमारे द्वारा संसार को मिलती हैं। आपको याद होगा कि अब्राहम को शत्रुओं से सुरक्षा और उसके मित्रों के लिए आशीषों की प्रतिज्ञा दी गई थी ताकि एक दिन वह पृथ्वी की सब जातियों के साथ परमेश्वर की आशीषों को साझा करे। और यही नहीं, अब्राहम की कहानियों में बार-बार हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को समय-समय पर सब प्रकार के लोगों के लिए अपनी आशीषों के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया।

जब उत्पत्ति की पुस्तक के मूल श्रोताओं ने इन घटनाओं के बारे में सीखा, तो उनके पास अपने समय की घटनाओं पर विचार करने के लिए कई अवसर थे। जब उनका सामना लोगों के विभिन्न समूहों से हुआ तो उन्होंने इस मार्गदर्शन को प्राप्त किया कि उन्हें संसार को आशीष देने के परमेश्वर के माध्यमों के रूप में कैसे सेवा करनी थी। वे शत्रुओं के विरुद्ध परमेश्वर की सुरक्षा के बारे में आश्वस्त हो सकते थे और अपने पड़ोसियों में परमेश्वर के राज्य की आशीषों को फैलाने के प्रयासों के साथ आगे बढ़ सकते थे।

लगभग इसी प्रकार, हम मसीहियों को आज अपने जीवनों पर इस उद्देश्य को लागू करना चाहिए। हम भी परमेश्वर की सुरक्षा के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं और जगत के छोर तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने के द्वारा पृथ्वी की सब जातियों के लिए आशीष बनने का प्रोत्साहन पा सकते हैं।

उपसंहार

अब्राहम के जीवन के आधुनिक प्रयोग पर आधारित इस अध्याय में हमने खोज की है कि उत्पत्ति की पुस्तक में कुलपिता के लिए समर्पित अध्याय कैसे आज हमारे संसार के लिए प्रासंगिक हैं। सबसे पहले हमने देखा कि बाइबल के इस भाग पर आधारित मसीही दृष्टिकोण अब्राहम के महान वंश के रूप में मसीह की ओर ध्यान आकर्षित करता है। यह उन तरीकों को खोजता है जिनमें मसीह उन उद्देश्यों को पूरा करता है जिन्हें हम अब्राहम के जीवन में पाते हैं। परंतु इसके अतिरिक्त, हमने यह भी देखा कि अब्राहम का जीवन कलीसिया, अर्थात् अब्राहम के सामूहिक वंश पर कैसे लागू होता है। मसीह में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को पवित्रशास्त्र के इस भाग की शिक्षाओं के अनुसार कैसे जीवन व्यतीत करना है।

जब हम उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन को और बारीकी से देखते हैं, तो आज हमारे पास अपने जीवनों में कुलपिता के जीवन को लागू करने के कई अवसर होंगे। हम पाएँगे कि पिता अब्राहम के बारे में मूसा का विवरण न केवल हमारे हृदयों को कुलपिता की ओर आकर्षित करता है, बल्कि अब्राहम के वंश मसीह की ओर, तथा इस अद्भुत बात की ओर भी आकर्षित करता है कि मसीह में हम भी अब्राहम की संतान और अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।